REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

मंजूर एहतेशाम के उपन्यास 'बशारतमंजिल' में समाज का यथार्थ

डॉ. एम. जे. बंधिया
एम.ए.(हिन्दी), बी.एड्.(हिन्दी),पीएच.डी.(हिन्दी)

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य जगत में मजूर जी एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। मंजूर एहतेशाम का जन्म उस समय हुआ जब भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुए एक वर्ष ही हुआ था और देश का विभाजन भी हो चुका था। प्रत्येक साहित्यकार के साहित्य में उसके व्यक्तित्व की छाप रहती है। स्वयं उनका जैसा जीवन विस्तार है जीवन में वह जो देखता सुनता है, जीवन सम्बन्धी उसकी जो मान्यताएँ हैं, उसके जो मनोवेग हैं उन्हीं को वह कथा पात्रों, विषम विवेचन तथा परिस्थिति चिंतन के माध्यम से अपने कथा–साहित्य में प्रस्तुत करता है।

पमंजूर एहतेशाम साहित्य और कला को सोद्देश्यता स्वीकार करने वाले सशक्त साहित्यकार हैं। उन्होंने प्रेमचंद के आदर्श और यथार्थ तथा समता का भाव रखने वाले गांधी जी का स्पष्ट अनुकरण करते हुए समकालीन मूल्यों का लेखा–जोखा एक संवेदनशील गहराई के साथ प्रकट किया है। मंजूर एहतेशाम को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि उनके उपन्यास 'बशारत मंजिल' से मिली है। स्वतन्त्र भारत में हिंदू–मुस्लिम सम्बन्धों के यथार्थ से जुड़ा हुआ यह उपन्यास अपने समय की अनेक समस्याओं को भली–भांति प्रस्तुत करता है। उपन्यास में लेखक ने मुस्लिम परिवार की कथा को प्रमुख आधार प्रदान किया है। लेखक ने पारिवारिक विघटन, नारी की स्थिति, अन्तर धर्म विवाह, युवा पीढ़ी का भटकाव, नशाखोरी, अंधविश्वास, दहेज प्रथा और हिन्दू–मुस्लिम मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

पारिवारिक विघटन की समस्या आज हर परिवार में देखने को मिलती है। परिवार के सदस्यों में विचारों की भिन्नता हो तो परिवार का विघटन सम्भाव्य है। उनके व्यक्तिगत स्वभाव, आदतों तथा रूचियों में एकत्व न होने पर उनमें बात–बात पर झगड़ा होता है और परिवार में अव्यवस्था फैल जाती है। आलोच्य उपन्यास में बन्दा अली खान तथा संजीदा के बीच विचारों की विभिन्नता के कारण ही आपसी वैमनव्य विभाजन का रूप ले लेता है। वहीं दूसरी तरफ उपन्यास में नैतिक मूल्यों का पतन होता नजर आता है। युवा पीढ़ी का बड़ों के प्रति सेवाभाव खत्म होता नज़र आता है। सभी अपने स्वार्थ में डूबे हुए थे। आपसी सम्बन्धों ने स्वार्थ व खटास का रूप अपना लिया था। बन्दा अली खां ऐसी ही घटिया मानसिकता से युक्त युवक है। वह अपनी माँ को अपने आठ साल के बच्चे से पर्दा करने के लिए कहता है। जो उसकी तुच्छ मानसिकता को दर्शाता है। बन्दा अली खान की पत्नी माहरू जमानी अपने पति की ऐसी घृणित मानसिकता के विषय में कहती है, ''जो व्यक्ति अपनी माँ पर शक करते हुए किसी को जान से मान सकता है, उससे बीवी या औलाद किस तरह की समझ या प्यार की उम्मीद कर सकती है।''1 इस प्रकार लेखक ने अपने उपन्यास में परिवार के आपसी सम्बधों में ही शक भरी दृष्टि रखते हुए नैतिक मूल्यों का पतन होते दिखाया है।

आधुनिक आर्थिक जगत् पूंजीवादी तथा समाजवादी कठघरों में बंटा हुआ है। युवा आर्थिक समस्याओं के कारण मानसिक रूप से अशांत रहता है। प्रायः निर्धनता की स्थिति में व्यक्ति अपने परिवार का भरण–पोषण नहीं कर पाता जिसके कारण उसकी पारिवारिक समस्याएं और भी बढ़ती चली जाती हैं। 'बशारत मंजिल' उपन्यास में संजीदा अपने शायरी के माध्यम से पैसे कमाकर अपना व अपनी बेटियों का पेट भरता है। परन्तु संजीदा का भाई उसके इस काम का विरोध करता है। इस कारण संजीदा के घर की स्थिति आर्थिक रूप से

बहुत कमजोर हो जाती है। लेकिन संजीदा की आर्थिक स्थिति व उसके पेशे को न समझकर उसकी बेटियां उस पर ताने कसती हुई कहती हैं, ''दहेज में देने–दिलाने के लिए कुछ तो हो वे शादी सोचे, खाली–पीले किसी का हाथ पकड़कर तो वह जाने से रही।''2 इसी मानसिकता से आहत होकर अंत में संजीदा नशाखोरी एवं कामवासना का शिकार हो जाता है। आर्थिक कमजोरी के कारण वह अपने परिवार से भी दूर हो जाता है।

हर नए युग में समय के साथ–साथ बदलाव की स्थिति पाई जाती है। यह बदलाव मनुष्य के साथ–साथ समाज राष्ट्र व देश में भी दिखाई पड़ता है। समाज में फैलने वाली विसंगतियों का हल तलाश करने वाले युवा हर जमाने में हुए हैं। लेकिन आम लोगों के लिए बदलाव का साथ दे पाना तो हमेशा मुश्किल रहा है। उपन्यास के कुछ युवा पात्र समाज में होने वाले परिवर्तन को देखकर गंभीर हो जाते हैं। धनपत राय समाज के परिवर्तन को देखकर संजीदा से कहता है ''पढ़े–लिखे लोग बदलाव के नाम पर मूर्ख बना रहे हैं। हम तो मियां अब सहज तमाशबीन होकर रह गए हैं''3, जो लोग परिवर्तन के अनुसार अपने आप को ढाल लेते हैं, वे सुख–चैन से जीवन यापन कर लेते हैं और जो समाज में होने वाले परिवर्तन का विरोध करते हैं वे अपना जीवन संकट में डालने के सिवाय कुछ नहीं कर पाते। संजीदा कहता है, ''वक्त और जमाना बदलता है और उसके साथ इंसान के सोचने का ढंग भी।''4 लेखक ने 'बशारत मंजिल' उपन्यास के माध्यम से समाज में समय–समय पर होने वाले परिवर्तन से अवगत कराया है और जन–जीवन को परिवर्तन के अनुसार ढलने का सुझाव दिया है।

युवा पीढ़ी का भटकाव आज एक अहम् समस्या बन गई है। आज समाज के लोग अपने तक सीमित होकर रह गए हैं। बढ़ते जीवन मूल्यों एवं संघर्षों ने आज परिवार को रसहीन बना दिया है। मनुष्य का समस्त आनंद, उल्लास, माधुर्य समाज समाज से धूमिल हो चुका है। विशेष रूप से हमारी नई पीढ़ी अर्थात् युवा पीढ़ी जो अपने घर परिवार के प्रति उदासीन बने रहते हैं, वे आज अपने पथ से भटक रहे हैं। 'बशारत मंजिल' उपन्यास में युवा पीढ़ी को भटकते हुए चित्रित किया गया है। संजीदा अट्ठारह वर्ष की आयु में ही धूम्रपान व कामुकता जैसी विसंगतियों की ओर प्रवृत्त हो जाता है। वह गुलबदन नाम की वेश्या के मोह में पड़कर अपना घर बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ता। वह अपनी इन बुराइयों की चर्चा अपने मित्रों से करता हुआ कहता है, ''गुलबदल ही वह अपनी औरत है जिसे उसने बखूबी जाना है।''5 संजीदा का कॉलेज के मित्रों के साथ शराब पीना, तवायफों के कोठे पर जाना उसके जीवन को नष्ट करने के कगार पर पहुँचा देता है।

भारतीय समाज में पाश्चात्य सभ्यता के आगमन से नशाखोरी और वेश्यावृत्ति ने ऐसी भयावह स्थिति पैदा कर दी है जो रुकने का नाम नहीं ले रही है। इनमें सबसे ज्यादा युवा वर्ग शामिल है। संजीदा जैसे पढ़े–लिखे युवा भी ऐसी विसंगतियों से बच नहीं पाते। पाश्चात्य सभ्यता की ये भयानक बुराइयाँ उसे उसके पथ से भटकाकर गर्त की ओर धकेल देती है। लेखक ने युवा पीढ़ी को उनके पथ से भटकाने वाली विसंगतियों से पाठकों को अवगत कराया है।

सामाजिक आचरण का स्थिर और चिर अंग रूढ़ि कहलाता है। समाज में आचार–विचार अथवा रूढ़ियाँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती आती हैं जिन्हें परम्परा कहा जाता है। इस अकृत्रिम परम्पराओं और रूढ़ियों के कारण ही समाज में अंधविश्वास फैलता जाता है जो समाज की प्रगति में बाधक बनता है। भारतीय समाज भी अन्धविश्वास से ग्रसित है। समाज में अशिक्षित वर्ग के साथ–साथ शिक्षित वर्ग भी अंधविश्वास को बढ़ावा देते है। उपन्यास में अमतुल कबीर रूढ़िवादी विचारों की स्त्री है जिसका ज्यादा से ज्यादा वक्त लोगों को गण्डे–ताबीज देने में बीतता है। लेखक लिखते हैं, ''लोग उनके पास आते थे, जिन्नात और भूत–प्रेत के लिए ताबीज़ और दम का पानी लेने के लिए।''6 लेखक 'बशारत मंजिल' उपन्यास के माध्यम से दर्शाते हैं कि लोगों में अंधविश्वास की जड़ें मजबूत होती जा रही थी। प्रत्येक छोटे से छोटे कार्य को भी अंधविश्वास की नजर से देखा जाने लगा था। अमतुल कबीर बड़ी बेगम से कहती है, ''छोटे मिर्जा, कहो तो सही–सीढ़ी को सिल पर सौंफ सूखने को रखी है, सरकर खड़े हो तो साया न पड़े।''7 आज मानव इतना महत्वकांक्षी हो गया है कि बिना किसी मेहनत के अन्धविश्वास के जरिये सुख–सुविधाओं का भोग करना चाहता है।

अंत में कह सकते हैं कि मंजूर एहतेशाम ने अपने उपन्यास 'बशारत मंजिल' में अपनी पैनी दृष्टि रखते हुए समाज की विभिन्न समस्याओं से पाठकों को अवगत कराया है। ये सभी समस्याएँ किसी एक व्यक्ति या एक समाज अथवा एक देश की नहीं है बल्कि ये सभी समस्याएँ पूरे विश्व को जकड़े हुए हैं। युवा पीढ़ी पथ भ्रष्ट न होकर समाज में परिवर्तन कर और एक नई पहल के साथ जन–जीवन को नष्ट होने से बचा सकती है।

संदर्भ सूची

1. मंजूर एहतेशाम, बशारत मंजिल, पृ. 96
2. वही, पृ. 200
3. वही, पृ. 66
4. वही, पृ. 29
5. वही, पृ. 98
6. वही, पृ. 44
7. वही, पृ. 62

डॉ. एम. जे. बंधिया
एम.ए.(हिन्दी), बी.एड्.(हिन्दी),पीएच.डी.(हिन्दी)

LBP PUBLICATION